International Journal of Applied Research 2017; 3(1): 890-891

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 890-891
www.allresearchjournal.com
Received: 19-11-2016
Accepted: 22-12-2016

विजय शंकर पंडित
गवेषक, विश्वविद्यालय
मैथिली–विभाग, ललित नारायण
मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

Correspondence
विजय शंकर पंडित
गवेषक, विश्वविद्यालय
मैथिली–विभाग, ललित नारायण
मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

आधुनिक मैथिली साहित्यमे लिलीरेक योगदान

विजय शंकर पंडित

सारांशः
आधुनिक साहित्यमे लिलीरेक महत्वपूर्ण योगदान अनेक अछि। एहि। अध्यायमे हुनक योगदानक विवेचन आ विश्लेषण कएल जाएत। मुदा लिलीरेक सभसँ पैघ योगदान अछि जे हुनक साहित्यमे विचारधारा अछि। हुनक कथा हो अथवा उपन्यास, हुनक नाट्य–एकांकी हो अथवा आत्मकथा–कोनोने कोनो चिन्तन लऽ कऽ ओ मैथिली साहित्यक विशाल परिधिकें परिपुष्ट करैत छथि। हुनक साहित्य लेखनक बिन्दु–बिन्दु विश्लेषणसँ स्पष्ट होएत जे ओ आधुनिक विचारधारासँ जुड़ल छथि। हुनक साहित्यमे जमींदारी व्यवस्थाक तामझामक वर्णन भेटैत अछि, मुदा ओ जमींदारी व्यवस्थाक वास्तविकता आ तकर प्रभावक वर्णन कए जनताक प्रश्न आ आकुलताकें ठाढ़ करबामे सफल भऽ जाइत छथि। ओ सामंतवादक अनेक पक्षक वर्णन करैत छथि। सामंतवादसँ जुड़ल कला–संगीत, नृत्य आ भोजभातक चर्चा करैत छथि। मुदा सामंतवादमे हाहाकार आ आर्तनाद करैत महिलाक आकुल स्वरकें प्रस्तुत कऽ दैत छथि। ओ लिखलन्हि तँ खुब लिखलन्हि। ओ जमि कऽ लिखलन्हि। ओ साफ–साफ शब्दमे लिखलन्हि। ओ चोरा–छिपाकऽ किछु। नहि लिखलन्हि। हुनक लेखनक यात्रा जमींदारी व्यवस्था आ सामंतवादसँ आरम्भ होइत अछि आ नक्सलवादक धुआँ–धधरा पर पहुँच जाइत छन्हि। ओ आर्थिक विभेद पर लिखलन्हि। ओ आर्थिक असमानताक वर्णन कएने छथि।

प्रस्तावना
मैथिली आ साहित्य जगतमे लिलीरेक पदार्पण मैथिली पत्रिकाक माध्यमसँ भेल। दरभंगासँ वैदेही पत्रिकाक प्रकाशन होइत रहैक। प्रो. कृष्ण कान्त मिश्र दरभंगासँ वैदेही पत्रिकाक प्रकाशन करैत रहैत। तहिया आधुनिक कालक अनेक मूर्धन्य आ यशस्वी साहित्यकार वैदेही पत्रिकाक माध्यमसँ मैथिली जगतमे प्रवेश कएने रहथि। 1953 सँ वैदेही पत्रिका व्यवस्थित रूपे प्रकाशित होइत रहैक। एहन मूर्धन्य साहित्यकारमे ललित, राजकमल, मायानन्द मिश्र, धीरेन्द्र, सोमदेव, रमानन्द 'रेणु', हंसराज, आदि अनेक साहित्यकार अपन लेखनसँ मैथिली साहित्यक विशाल परिधिकें परिपुष्ट करैत रहथि। 1956क कालखण्ड। वैदेही पत्रिकामे रंगीन परदाक प्रकाशन भेल रहैक। लेखिका रहथि कल्पना शरण। पटनासँ प्रकाशित मिथिला मिहिरमे अंदाज बीस वर्षक बाद एकटा कथा छपल रहैक। कथाक प्रकाशन तीन अंकमे भेल रहैक। कथाक शीर्षक रहैक 'अन्तराल'। एहि कथाक प्रकाशनक संग एकटा संपादकीय टिप्पणी रहैक जाहिमे स्पष्ट कएल गेल रहैक जे रंगीन परदाक मूल लेखिका कल्पना शरण नहि श्रीमती लिलीरे छथि। स्पष्ट कएल गेल रहैक जे लिलीरे कल्पना शरणक नामसँ रंगीन परदाक प्रकाशन कएने रहथि। एहि खेप मिथिला मिहिरमे अन्तराल कथा लेखिका श्रीमती लिलीरे रहथि। एहि तरहें वैदेही आ मिथिला मिहिरसँ लिलीरेक साहित्यक आरम्भिक इतिहास जुड़ल अछि। एहि सभ प्रसंगक चर्चा लिलीरे विश्वनाथक अन्तरंग वार्तामे कएने छथि। एतय अन्तरंग वार्ताक एक अंश प्रस्तुत अछि–

– ''रंगीन परदा की थिक..?

– मूलतः कथा थिक... वर्जित काम–सम्बन्ध.... देहक इच्छा. जे होइत छैक.... जे असली चेहरा छैक.... जे जीवनक यथार्थ छैक से लोक लीखि नहि पबैत अछि। हम लिखलहुँ।''

– ''मुदा रंगीन परदा पर परदा किएक देलिऐक?''

प्रश्न सूनिक' लिली रे हँस' लगलीह, पुनः गम्भीर होइत कहलनि– "देखू.... हमर वयस ओहि समयमे थोड़ छल... मैथिल समाजक अप्पन जड़ता..... कन्जरवेटिज्म...रंगीन परदाक यथार्थकें लोक सहन करत की नहि करत? तकर भय.... हमर घऽर–परिवार... तें तखन कल्पनाशरणक नामे लिखलिऐक। मुदा किछु गोटएकें बूझल रहनि– विशेष रूपें राजकमल आ ललितके.....'' [1]

एहि विवरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली पत्र–पत्रिकाक माध्यमे लिलीरेक साहित्य प्रकाशित होइत रहल। उदाहरणस्वरूप लिलीरेक पहिल उपन्यास 'पटाक्षेप' मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भेल रहन्हि। मिथिला मिहिरमे 1989मे एहि उपन्यासक प्रकाशन धारावाही रूपमे भेल छल। वैदेही आ मिथिला मिहिरक अतिरिक्त हिनक अनेक रचनाक प्रकाशन भारती मण्डन, कर्णमृत, रचना, मिथिला दर्शन आदि पत्र–पत्रिकामे होइत रहलन्हि। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे लिलीरेक साहित्यक जीवंत आ जाग्रत करबामे मैथिली पत्र–पत्रिकाक अन्यतम योगदान रहल अछि। ओ तें संक्षेपमे मैथिली पत्र–पत्रिकाक विकास ओ महत्वक विवेचन प्रसंगवश अपेक्षित अछि–

भाषा आ साहित्यक विकास निर्भर रहैत छैक जीवंत पत्रिका पर। प्रचार ओ प्रसारक अनेक माध्यममेसँ एक महत्वपूर्ण माध्यम थिक पत्र–पत्रिका। आधुनिक विकासक युगकें पत्र–पत्रिकाक युग सेहो कहल जाइत छैक। मैथिली भाषा–साहित्यक विकासमे सेहो पत्र–पत्रिकाक महत्वपूर्ण योगदान रहलैक अछि। अतः पत्र–पत्रिकाक अध्ययन ओ अनुशीलनसँ भाषा ओ साहित्यक अध्येताकें विकासक्रम बुझबामें पूर्ण सहायता ओ सुविधा प्राप्त होइत छनि।[2]

जहिना कोनो पाथरक खण्ड पहाड़सँ दूतिक नदीक प्रवाहमे बहैत–गुरकैत जाइत–जाइत चिक्कन होइत शालीग्राम वा नर्मदेश्वरक आकार ग्रहण कय कहियो पूजाक सराइमे स्थान प्राप्त कऽ लेने अछि तहिना भाषा ओ शब्दक स्वरूप जनकण्डक प्रवाह में बहैत–बहैत एक एहन स्वरूप ग्रहण कऽ लैत अछि जे साहित्यक सराइमे पहुँचि पूज्य ओ प्रयोक्तत्य भऽ जाइत अछि। जनकण्ठक प्रवाहमे बनल एहन शब्द जतय पत्र–पत्रिकाकें अभिव्यक्ति सामर्थ्य प्रदान कऽ सबल बनबैत अछि ततय पत्र–पत्रिका एहन–एहन शब्दकें प्रयोगमे आनि भाषाक स्वरूपकें स्थिरता प्रदान करैत अछि जाहिसँ एक क्षेत्रीय भाषा अन्य क्षेत्रीय भाषासँ पृथक अपन स्वतन्त्र अस्तित्व बनाय रखवामे सक्षम होइत अछि।[3]

मैथिली पत्रकारिताक इतिहास कोनो प्राचीन नहि अछि। संप्रति एकर आठम दशक बीति रहल छैक, शतकपर एखन धरि नहि पहुँच सकल अछि। तथापि पत्र–पत्रिकाक सहयोगसँ मैथिली–साहित्यक भण्डार एतेक समृद्ध भऽ सकल अछि ओ भाषा जीवित रहि सकल अछि। एखनहु मैथिली भाषाक समक्ष अनेक समस्या छैक जकर समाधान तकबामे पत्र–पत्रिकाक अमूल्य साहारूय प्राप्त भऽ सकैत अछि।

अद्यावधि स्वतन्त्र रूपें एहि विषयक अनुशीलन नहि भेल छल। साहित्यक इतिहास लिखनिहार लोकनि अथवा मैथिली भाषाक चिंतक लोकनि यदा–कदा जे किछु लिखबो कयलनि अछि, थोड़ बहुत एहि पर प्रकाश देबो कयलनि अछि से अपर्याप्त तँ अछिए, कतिपय भ्रांतिक जमू सेहो ओहिसँ भेलैक अछि। ओहि भ्रांतिक हमरा जनैत निराकरण सर्वथा वांछनीय अछि।[4]

मैथिली भाषाक अध्ययन ओ अध्यापनक–क्षेत्रक क्रमिक विस्तारे भेल जाय रहल अछि। विभिन्न विश्वविद्यालय केवल स्नातकोत्तर परीक्षे घरि एकर अध्यापनक व्यवस्था अछि से नहि अनुसंधान–कार्यक हेतु छात्रवृत्ति से हो देबाक व्यवस्था अछि। शतशः छात्र आब एम.ए., पी–एच.डी., डी.लिट् आदि उपाधि ग्रहण करबाक हेतु अध्ययनमे लागल रहैत अछि तथा शतशः शोध–प्रबन्ध लिखल जाय चुकल अछि ओ लिखल जाय रहल अछि जाहिमे किछुए प्रकाशमे आबि सकल अछि।[5]

बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षामे मैथिलीकें एक स्वतन्त्र विषयक रूपमे स्वीकृति प्राप्त भेला उत्तर एकर क्षेत्र आरो विस्तृत भऽ गेलैक अछि। शताधिक व्यक्ति आयोगक परीक्षामे प्रतिवर्ष सफलता पाबि विभिन्न उत्तरदायित्वपूर्ण पदपर नियुक्त भऽ कार्यक्षेत्रमे अवतीर्ण होइते छथि। अतः एखन घरि जतेक तथ्यात्यक भ्रान्ति उत्पन्न कयल गेल अछि तकर यथाशीघ्र निराकरण आवश्यक भऽ गेल छल।[6]

निष्कर्ष :

उपर्युक्त आवश्यकता ओ उपादेयताकें दृष्टिमे राखि एहि दिस प्रवृत भेलहुँ। यावन्तो साधन उपलब्ध करवामें पूर्ण सफलता नहि प्राप्त भऽ सकल, तखन जतबा जे उपलब्ध कऽ सकलहुँ ताही आधार पर विचार करबाक हेतु बाध्य होअय पड़ल, परंतु एतबोसँ बहुत किछु भ्रान्तिक निरसन होयत ओ सत्य सभक समक्ष आबि सकत से विश्वास अछि।

यद्यपि ई कहब कोनो आवश्यक नहि, ई स्वतः सिद्ध अछि जे, जे कोनो विचारक अपन ग्रन्थमे विचार व्यक्त करैत छथि से हुनक व्यक्तिगत मत होयते छनि तथापि हम ई स्पष्ट कहि देबय चाहैत छी जे एहिमे अभिव्यक्त विचार हमर व्यक्तिगत थिक। हँ, ई सत्य जे कोनो पूर्वाग्रहसँ ग्रस्त भऽ हम किछु नहि लिखलहुँ अछि, 'नामूलंलिख्यते किन्चित नानपेक्षितमुच्यते'।

अनुसंधानक क्रममे जतय जे सत्य देखबाये आयल तकरा स्पष्टरूपें व्यक्त करबामे संकोच नहि कयलहुँ अछि। एहिसँ बहुतो सहमत होयताह तँ किछु गोटे असहमतो भऽ सकैत छथि, परंतु विचारक कोनो बिन्दु एहन नहि अछि जाहिसँ सब सहमते होथि।

संदर्भ सूची :

1. विश्वनाथ, युगान्तर, 2001, मैथिली रचना मंच, दरभंगा, पृ.– 163
2. तथैव, पृ.– 165
3. डॉ. दुर्गानाथ 'श्रीश' मैथिली साहित्य इतिहास, 1991, भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, पृ.– 168
4. मोहन भारद्वाज, मैथिली साहित्य इतिहास लेखन, 1989, चेतना समिति, पटना, पृ.– 207
5. तथैव, पृ.– 209
6. विश्वनाथ, युगान्तर, 2001, मैथिली रचना मंच, दरभंगा, पृ.– 168